द्वारा लिखित स्□व. डॉ. विजय लाल
मंगलवार, 21 नवम्बर 2006 18:53 - अंतिम अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:37

''..... यीशु ने उनसे कहा, वह समय आ गया है कि मनुष्□य के पुत्र की महिमा हो□'' यूहन्□ना 12:23

प्रभु यीशु मसीह बहुत छोटी सी घटनाओं में सुदूरगामी संभावना□ं देख सकते थे□ यूहन्□ना 12:20 से 25 में □कऐसी ही घटना का वर्णन है□

बहुत से लोग पर्व पर यरूशलेम में आ□ थे, उनके अनुगामियों की संख्□या बढ़ती जाती थी, यरूशलेम में यीशु का महिमामय प्रवेश हुआ और लोगों ने जय जयकार के नारे लगा□□ लोगों में यह भी चर्चा थी कि उसने लाज़र को मृतकों में से जीवित कर दिया□ फ़रीसी हताश थे, उनकी जलन भरी शिकायत थी कि देखो सारा संसार उसका अनुगामी बनता जा रहा है□

तभी □कछोटी सी कि□तु ख्रीष्□ट की दृष्□टि में □कमहत्□वपूर्ण घटना हुई□ —कुछ यूनानी आ□, यीशु के शिष्□य फिलिप्□पुस से विनय की और कहा ''श्रीमान्, हम यीशु से भेंट करना चाहते है□'' यूनानी लोग जानने के इच्□छुक लोग होते है, ज्□ञान के प्□यासे होते है कि□तु उनके इस सामान्□य से निवेदन में फिलिप्□पुस को सामान्□य जिज्□ञासा से कुछ अधिक िया परे ही प्रतीत हुआ होगा — स्□वयं अकेले स्□वामी के पास निवेदन पहुंचाने के योग्□य साहस वह □कत्रित कर न सका और वह अन्द्रियास के पास गया, तब अन्द्रियास और फिलिप्□पुस दोनों मिलकर यीशु के पास पहुंचे□ ऐसा प्रतीत होता है मानो यीशु उस क्षण भावनाओं से अभिभूत हो ग□ वह क्षण, वह बि□दु, उसकी दृष्□टि में □कबहुत महत्□व का क्षण प्रतीत हुआ; उन्□होंने कहा —

''मानव पुत्र की महिमा होने का समय आ पहुंचा है'' अर्थात् वह क्षण आ पहुंचा है जब मेरा कार्य पूरा हुआ, मैंने संसार में अपने आगमन के उद्□देश्□य को पूरा किया, या उद्□देश्□य की पूर्णता की प्रक्□रिया में प्रथम लक्ष्□य प्राप्□त हो गया□ कुछ मुट्□ठी भर यूनानियों के प्रभु के पास आने में, उनके उद्□देश्□य प्राप्□ति का, उनके मिशन की पूर्णता का, प्रारम्भिक बि□दु स्□पर्श हो गया□ उन्□हें दिखाई दिया — दीवार में □कदरार उत्□पन्□न हो गई है, जो भविष्□य में □कविशाल द्□वार बन जायेगी, जहां से सारे विश्□व की अन्□यजातियों का मुझ तक आना संभव हो सकेगा□

आज गिने चुने इस मार्ग के विषय में पूछने का साहस □कत्रित कर पा रहे है, कल कुछ इस पर चलेंगे, फिर □कछोटी सी पगडण्□डी बनेगी जो विकसित होते होते □कविशाल राजमार्ग बन जा□गी और संसार के कोने—कोने से अन्□यजातियों के हज़ारों, लाखों और करोड़ों लोग इस राजमार्ग पर चलते हु□ मेरे पास आ□ंगे□

कि□तु आज इस छोटे से बि□दु के प्रस्□फुटित, अंकुरित और विकसित होने के ला□ गेहूं के दाने को गिरकर मरना आवश्□यक है□ पद 24 में, उन्□होंने कहा ''जब तक गेहूं का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है परन्□तु जब मर जाता है तो बहुत फल लाता है□''

महाबलिदान का समय आ पहुंचा है, रूधिर बहा□ जाने का समय आ पहुंचा, मेरे रक्□त से सिंचेगा यह दाना, अन्□यजातियों की भीड़ आयेगी, यूनानियों की, रोमियों की, हूणों की, आर्यां की, अनार्यां की, अफ्□रीकियों की, चीनियों की, भारतीयों की; गैर यहूदी मानवता की□ उसने पद 32 में कहा ''मै यदि पृथ्□वी पर से ऊंचे पर चढ़ाया जाऊंगा तो सबको अपने पास खींचूंगा□''

द्वारा लिखित स्व. डॉ. विजय लाल
मंगलवार, 21 नवम्बर 2006 18:53 - अंतिम अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:37

दूर क्षितिज पर, क्रूस को वह देख सका – और क्रूस के उस पार वह उस भीड़ को देख सका जो उसकी ओर चली आती थी और जिसमें आप और मैं सम्मिलित हैं।
छोटी सी घटनाओं में सुदूरगामी संभावनाएं देख सकते थे यीशु।
थोड़े से यूनानियों में, करोड़ों अन्यजातियों के आने की पदचाप सुन सकते थे यीशु।

उस समय की बात है जब प्रभु ने सत्तर शिष्य नियुक्त किये थे और प्रचार के प्रशिक्षण के लिये उसने उन्हें दो–दो करके विभिन्न गांवों और नगरों में भेजा, उसने उन्हें निर्देश भी दिये थे – बटुआ, झोले, जूती न लेना। ये शिष्य जब लौटे जिसका वर्णन लूका 10:17 से 24 में है, वे अपनी उपलब्धियों से बहुत उत्साहित थे। उन्होंने प्रभु से, अपनी जीतों का वर्णन किया और कहा कि देख प्रभु, हमारा अद्भुत अनुभव रहा, तेरे नाम से अब दुष्टात्माएं भी हमारे वश में हैं। जब प्रभु ने यह सब सुना तो उसने कहा तुम जब अपनी विजय की उपलब्धियों का वर्णन कर रहे थे और अपनी आत्मिक सामर्थ्य का वर्णन कर रहे थे तो "मैं शैतान को बिजली की नाईं स्वर्ग से गिरा हुआ देख रहा था।" शिष्यों की छोटी सी किन्तु महत्वपूर्ण उपलब्धियों में प्रभु यीशु, शैतान की अन्तिम पराजय की संभावना का दृश्य देख रहे थे – इतने सीधे–सादे सरल अनपढ़ लोग उस काम को कर सके थे जो ज्ञानियों से संभव नहीं – पद 21 में लिखा है – "उसी घड़ी वह पवित्र आत्मा में होकर आनन्द से भर गया और कहा, –

हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं।" यह सामर्थ्य जो कि ज्ञानियों को प्राप्त नहीं, बालकों के द्वारा प्रगट हुई है। यीशु ने देखा मुट्ठी भर सामान्य लोगों में जो यह सामर्थ्य है, जब यह विकसित होगी और अनेकों में प्रगट होगी तब शैतान की पराजय निश्चित है – यह घटना छोटी सी नहीं है, इस घटना में मैं शैतान को बिजली की नाईं स्वर्ग से गिरा हुआ देख रहा हूं, इस घटना के विषय में उन्होंने कहा पद 23 में "धन्य हैं वे आंखें जो ये बातें, जो तुम देखते हो, देखती हैं।"

हम यीशु के जीवन की उस घटना को कैसे भूल सकते हैं जो कैसरिया फिलिप्पी के देश में घटित हुई थी। प्रभु यीशु मसीह ने शिष्यों से पूछा, "लोग मुझे क्या कहते हैं?" तथा उनके उत्तर प्राप्त हो जाने पर उन्होंने प्रश्न को केन्द्रित करके कहा था, किन्तु "तुम मुझे क्या कहते हो?" और शमौन पतरस का वह प्रसिद्ध उत्तर – "तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।" प्रभु यीशु मसीह इस उत्तर को सुनकर भावनाओं से पूरण हो गए और अपने शिष्य से कहा, "शमौन तू धन्य है, क्योंकि यह सत्य तुझ पर मांस और लोहू ने प्रगट नहीं किया परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है प्रगट किया है।"

प्रभु यीशु मसीह ने पतरस के इस विश्वास को देखा और यह भी देखा कि पतरस का यह विश्वास भविष्य में हज़ारों, लाखों, करोड़ों, लोगों का विश्वास बन जाएगा। प्रभु ने कहा पतरस, तेरे नाम का अर्थ तो पत्थर है किन्तु तेरा यह विश्वास एक चट्टान है और इस चट्टान पर मैं अपनी क्लीसिया बनाऊंगा जो कि सामर्थी और शक्तिशाली क्लीसिया होगी और नर्क के फाटक भी अर्थात् शैतान की समस्त शक्तियां भी, उस क्लीसिया पर प्रबल नहीं होंगी, उसे पराजित नहीं कर सकेंगी।

तो प्रभु यीशु मसीह, छोटे से व्यक्तियों में, छोटी सी घटनाओं में, अद्भुत सुदूरगामी संभावनाएं देख सकते थे, एक व्यक्ति का विश्वास, थोड़े से शिष्यों की सामर्थ्य और सफलता तथा मुट्ठी भर यूनानियों की जिज्ञासा में उन्होंने परमेश्वर के राज्य की असीम संभावनाओं को देखा। वह आपके और मेरे भीतर की असीम संभावनाओं को भी जानता है। क्या हम अपनी संभावनाओं की परिधि तक पहुंचकर, अपने प्रभु के सपनों को साकार कर सकेंगे?